डॉ . भूपत राम, फ्रांसिस्को गोया की कृति - 3 मई 1808, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ. 9*

फ्रांसिस्को गोया की कृति - 3 मई 1808

डॉ . भूपत राम*

"The Third of May 1808" फ्रांसिस्को गोया द्वारा बनाई गई एक ऐतिहासिक और प्रभावशाली पेंटिंग है, जिसे 1814 में पूरा किया गया था। यह चित्र स्पेन में 2 मई 1808 को फ्रांसीसी सैनिकों द्वारा की गई आम नागरिकों की निर्मम हत्या की घटना को चित्रित करता है। यह आज भी स्पेन के म्यूज़ियो डेल प्राडो में सुरक्षित है।

चित्र की रूपरेखा

चित्र के मध्य में एक व्यक्ति दोनों हाथ उठाए खड़ा है, जैसे आत्मसमर्पण कर रहा हो, लेकिन उसका हाव-भाव उसे एक बलिदानी या मसीहा की तरह दर्शाता है। उसके चेहरे पर डर, बेबसी और संकल्प का मेल है। उसके चारों ओर अन्य लोग हैं जो गोली चलने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। सामने बंदूक थामे सैनिक कतार में खड़े हैं जिनका चेहरा नहीं दिखता - जिससे वे अमानवीय प्रतीत होते हैं।

कलात्मक विश्लेषण

- प्रकाश-छाया का चमत्कारी प्रयोग: चित्र में जलती हुई लालटेन के प्रकाश में मुख्य पात्र सबसे अधिक उभरा हुआ है, जिससे उसकी पीड़ा पर दर्शकों की निगाह टिकती है।
- रंगों की गंभीरता: गहरे और मद्धम रंगों ने इस चित्र को और भी भावनात्मक बना दिया है। मुख्य रूप से काले, सफेद और रक्त जैसे लाल रंगों का प्रयोग पीड़ा और संघर्ष की भावना को प्रबल करता है।
- रचना में विरोधाभास: सैनिकों की कठोर एकरूपता बनाम नागरिकों की भंगिमा चित्र को एक प्रतीकात्मक गहराई देती है।

प्रतीक और संदेश

इस चित्र में मुख्य व्यक्ति की मुद्रा यीशु मसीह की क्रूस पर चढ़ने की याद दिलाती है - जो उसे एक बलिदानी प्रतीक बनाती है। यह चित्र सत्ता की क्रूरता और आमजन की विवशता का सजीव दस्तावेज़ बन गया है। सैनिकों के चेहरे छिपे हैं जिससे उनकी अमानवीयता को बल मिलता है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

यह चित्र स्पेन और नेपोलियन की फ्रांस के बीच युद्ध के समय की है। गोया ने अपने चित्रों के माध्यम से न केवल क्रूरता का चित्रण किया, बल्कि लोगों की तकलीफ और प्रतिरोध को भी अमर बना दिया। यह चित्र उनकी दूसरी कृति "The Second of May 1808" से भी जुड़ा हुआ है।

"The Third of May 1808" एक मात्र कलाकृति नहीं है - यह विरोध, संवेदना और इतिहास का मौन साक्षी है। यह चित्र हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि युद्धों में सबसे बड़ा नुकसान आम इंसान को होता है। गोया ने इस रचना के माध्यम से युद्ध की भयावहता को सजीव किया है।